रस–शास्त्र एवं भैषज्य–कल्पना (प्रथम प्रश्न–पत्र)

खण्ड–क

1. रस शास्त्र की परिभाषा, निरूक्ति, संक्षिप्त इतिहास एवं रसौषधियों की विशेषताऐं।
2. परिभाषा प्रकरण – भावना, कज्जली, आवाप, निर्वाप, शोधन, मारण, भस्म परीक्षा, मूर्च्छना, जारणा, अमृतीकरण, लोहितीकरण, सत्वपातन, धातु पिष्टी, लवण, क्षारपंचक, क्षारत्रय, पंचमृतिका, पंचामृत, पंचगव्य, द्रावकगण आदि।
3. यंत्र की परिभाषा, दोलायंत्र, डमरूयंत्र, पुटयंत्र, खल्वयंत्र, बालुकायंत्र, पातालयंत्र, पातनयंत्र, पालिकायंत्र, कच्छप यंत्र आदि।
4. मूषा, पुट, कोष्ठी का सामान्य ज्ञान।
5. जी0एम0पी0 के अनुसार रसशाला का निर्माण

खण्ड–ख

1. पारद के पर्याय, प्राप्तिस्थान, प्रमुख खनिज एवं पांच भेद
   a. पारद दोष, शोधन, अष्टविध संस्कार, पारद की गतियाँ, हिगुलोत्थ पारद, कूपीपक्व कल्पनाऐं।
   b. पर्पटी कल्पना, रस पर्पटी, पंचामृत पर्पटी, श्वेत पर्पटी, बोल पर्पटी।
   c. पोटली कल्पना एवं खरलीय रसायन का सामान्य परिचय।
2. महारस, उपरस, साधारण रस, धातु एवं उपधातु द्रव्यों का सामान्य वर्गीकरण एवं अध्ययन।
3. रत्न– उपरत्न, सुधावर्ग, सिकता वर्ग, क्षार वर्ग द्रव्यों का सामान्य अध्ययन।
4. विष, उपविष, वर्गीय द्रव्यों का शोधन, गुण, धर्म, उपयोग मात्रा।

प्रयोगात्मक– पाठ्यक्रम में वर्णित औषध कल्पों का प्रत्यक्ष कर्माभ्यास द्वारा निर्माण इनके घटक द्रव्यों का चयन उनकी मात्रा, गुण एवं उपयोग का ज्ञान।

रस–शास्त्र एवं भैषज्य–कल्पना (द्वितीय प्रश्न–पत्र)

खण्ड–क

1. भैषज्य कल्पना की परिभाषा, संक्षिप्त इतिहास, आधारभूत सिद्धान्त एवं सवीर्यता अवधि।

2. निम्नलिखित औषधकल्पों का परिचय, परिभाषा, निर्माण विधि एवं मात्रा का विस्तृत वर्णन। स्वरस, कल्क, क्वाथ, फाण्ट, हिम, षडंगपानीय, उष्णोदक, तण्डुलोदक, लाक्षारस, मांस रस, मन्थ, औषधिसिद्धपानीय, औषधि यूष, अर्क, पानक, शार्कर, प्रमथ्या, रसक्रिया, फणित, अवलेह, घनसत्व, गुडपाक, चूर्ण, वटिका, गुटिका, वटक, पिण्ड, गुग्गुलुकल्प, लवणकल्प, मसिकल्प, अयस्कृति, क्षारसूत्र निर्माण आदि।

3. **स्नेह कल्पना** – निर्माण विधि, योगों का विस्तृत ज्ञान।

4. **सन्धान कल्पना** – निर्माण विधि, विभिन्न मद्यवर्गीय कल्पों, आसव–अरिष्ट, शुक्त वर्गीय कल्पों, कांजी, शुक्त आदि का विस्तृत वर्णन।

खण्ड–ख

1. विभिन्न पथ्य कल्पों– मण्ड, पेया, यवागू, विलेपी, कृशरा, अन्न भक्त, यूषरस, खण्ड, राब, षाडव, केशवार, तक्र, उदश्वित्, मथित, कदर, दधि, कूर्चिका आदि कल्पकों का निर्माण एवं प्रयोग विधि।

2. बाह्य प्रयोग कल्पों में लेप विधि, प्रकार, उनका निर्माण व प्रयोग विधि, शत धौत, सहस्त्रधौतघृत, एवं नवनीत मलहर, उपनाह सिक्थ तेल की निर्माण विधि।

3. निम्न विधियों का सम्यक ज्ञान–

   (क) (लोशन)– विभिन्न औषधियों के विलयन का निर्माण।

   (ख) वर्तिका (सपोजिटरीज) विशेष औषधियों की वर्तिकाओं का निर्माण एवं प्रयोग।

   (ग) लेप, लेप के भेद तथा निर्माण विधि, प्रलेप (प्लास्टर) की निर्माण विधि एवं प्रयोग।

4. फार्मेसी में प्रयुक्त आधुनिक यंत्रों का ज्ञान।

5. विभिन्न रस, रसायन एवं सिद्ध योगों घटक द्रव्य, मात्रा एवं प्रयोग – मृत्युंजय रस, सर्वज्वर हर लौह, संजीवनी, त्रिभुवनकीर्ति, आनन्द भैरव रस, प्रतापलंकेश्वर, रामबाण, नवायस लौह, पुनर्नवा मण्डूर, सप्तामृत लौह, कर्पूर रस, इच्छा भेदी, जलोदरारि, श्वासकुठार, लक्ष्मी विलास, वृहतवातचिन्तामणि, कस्तूरी भैरव व बसन्तमालती, बसन्त कुसुमकार, सूतशेखर, हृदयार्णव, गर्भपाल, कुमार कल्याण, राजमृगांक– इनकी मात्रा एवं आमयिक प्रयोग का ज्ञान।

6. औषधियों को अलमारी आदि में स्वच्छतापूर्वक व्यवस्थित ढंग से रखने का ज्ञान, (निर्मित एवं कच्ची औषधियों का संग्रहण एवं संरक्षण), औषधि संग्रह रजिस्टर में औषधियों की प्राप्ति एवं वितरण, इण्डेंट पंजिका का संरक्षण, औषधि सूची तैयार करना आदि।

प्रयोगात्मक– पाठ्यक्रम में वर्णित औषध कल्पों का प्रत्यक्ष कर्माभ्यास द्वारा निर्माण इनके घटक द्रव्यों का चयन उनकी मात्रा, गुण एवं उपयोग का ज्ञान।

(11)

रोग परिचय एवं चिकित्सा (प्रथम प्रश्न–पत्र)

1. विकृत शारीरिक वातादि दोषों के लक्षण, उनके प्रकोप के कारण, साम–निराम दोषों के लक्षण एवं उनका चिकित्सा सूत्र।
2. व्याधि– व्याधि की परिभाषा, व्याधि का वर्गीकरण एवं व्याधि का अधिष्ठान, नानात्मज रोगों का सामान्य ज्ञान।
3. निदान– निदान शब्द का अर्थ, निदान पंचक का सामान्य ज्ञान।
4. रोगी परीक्षा– रोगी की दर्शन, स्पर्शन एवं प्रश्न द्वारा परीक्षा विधि, अष्टविध परीक्षा का सामान्य ज्ञान, नाडी, ताप एवं श्वास गति की परीक्षा एवं अंकन विधि।
5. चिकित्सालय में प्रयोग होने वाले यंत्र जैसे थर्मामीटर, स्टेथोस्कोप, स्फिग्मोमैनोमीटर द्वारा रोगी की सामान्य परीक्षा विधि।
6. जीवाणु एवं उनसे उत्पन्न होने वाले रोगों का सामान्य परिचय एवं बचाव के उपाय।
7. व्याधि क्षमत्व एवं टीकाकरण।
8. आयुर्वेद चिकित्सा के सामान्य सिद्धान्तों का ज्ञान।

रजिस्ट्रार
भारतीय चिकित्सा परिषद,
उत्तराखण्ड

रोग परिचय एवं चिकित्सा (द्वितीय प्रश्न–पत्र)

1. चिकित्सा की परिभाषा, वर्गीकरण।
2. अनुपान की परिभाषा, अनुपान विधि, महत्त्व, रोगानुसार विशेष अनुपान।
3. औषधि मात्रा विधि, शिशु औषध मात्रा निर्धारण।
4. औषधि सेवन काल, भैषज मार्ग (route of administration)
5. पंचकर्म के पूर्वकर्म, प्रधान कर्म, पश्चात कर्म का सामान्य ज्ञान एवं इन. कर्मों में कल्पक का कर्त्तव्य।
6. निम्न रोगों के भेद, सामान्य लक्षण, सामान्य चिकित्सा विधि एवं पथ्य–अपथ्य का ज्ञान–
    - ज्वर– सामान्य ज्वर, विषम ज्वर (malaria. dengue. typhoid). श्वसनक ज्वर।
    - अतिसार, ग्रहणी, विसूचिका, विबन्ध, मुखपाक, अम्ल पित्त, अर्श
    - प्रतिश्याय, नेत्राभिष्यन्द, कर्णगूथ, कर्णस्त्राव
    - अर्दित, पक्षवध, संधिवात, ग्रधसी, आमवात
    - कृमि रोग, पाण्डु, कामला, रक्त पित्त
    - कास, श्वास, हिक्का, राजयक्ष्मा
    - हृदय रोग एवं उच्च रक्तचाप
    - मूत्र कृच्छ्र, अश्मरी, मुधमेह
    - रक्त प्रदर, श्वेत प्रदर
    - मूर्च्छा, अपस्मार
    - दद्रु, विचर्चिका
    - अर्धावभेदक
    - फक्क रोग

प्रयोगात्मक–

- मौखिक परीक्षा।

रजिस्ट्रार
राजकीय चिकित्सा परिषद,
उत्तराखण्ड

रूग्ण परिचर्या एवं व्यवहार आयुर्वेद (प्रथम प्रश्न–पत्र)

1. परिचारक के गुण, कर्त्तव्य, व्यवहार, परिधान, परिचारक का वैद्य, रोगी तथा रोगी के तिमारदार के प्रति कर्त्तव्य।
2. रूग्णालय में नवीन रोगियों के भर्ती के नियम, आगन्तुकों का रोगी कक्ष में प्रवेश नियम।
3. रोगी के शरीर की सफाई, मलपात्र एव मूत्रपात्र का प्रयोग, रोगी के रोगानुसार शैय्या तैयार करना, विभिन्न प्रकार की शैय्यायें।
4. निस्सहाय रोगियों की शैय्या स्नान तथा प्रक्षालन विधि।
5. रोगी के शरीर का ताप, नाडी गति, श्वसन गति, रक्त दाब तथा सामान्य परीक्षण करना एवं रोगी विवरण पत्र तैयार करना।
6. शैय्या व्रण, कारण एवं उनका प्रतिरोध तथा प्रतिकार।
7. मल, मूत्र तथा बलगम (sputum) को परीक्षण के लिए भेजने की विधि तथा किन–किन व्याधियों में इसका परीक्षण किया जाता है।
8. नासिका आदि अन्य मार्गों से रोगी को पोषण किन अवस्थाओं में दिया जाता है तथा उसकी विधि।
9. संक्रामक रोगों की विशिष्ट परिचर्या एवं परिचारक के लिए सावधानियाँ।
10. रूग्णालय में प्रयोग होने वाली वस्तुओं का विसंक्रमण।
11. इंजैक्शन, वैक्सीनेशन आदि के सिद्धान्त, प्रकार। बर्फ की थैली, दस्ताना, mackintosh. sphygmomanometer, bed cradle, rubber ring आदि उपकरणों का प्रयोग एवं विधि।
12. वस्ति एवं उत्तर वस्ति विधान तथा catheterisation विधि।
13. वाष्प स्नान, स्वेदन क्रियायें, उपनाह, सेंक, पुल्टिस, शुष्कस्वेद, अभ्यंग आदि।
14. शरीर का तापक्रम कम करने के लिए शीतोपचार, हिमपुटिका का प्रयोग एवं विधि।
15. औषध प्रयोग के विभिन्न मार्ग तथा उनका ज्ञान।
16. अनुपान विधि, प्रयोग तथा रोगानुसार विभिन्न अनुपानों का ज्ञान।
17. रोगी की मृत्यु की सम्भावना में परिचारक के कर्त्तव्य। मृत्युत्तर शव प्रबन्ध।

प्रयोगात्मक–

- विभिन्न उपकरणों की पहचान व उनकी प्रयोग विधि का ज्ञान।
- प्रोजेक्ट फाईल (पाठ्यक्रम के किसी एक विषय पर)।
- प्रैक्टिकल फाईल (पूरे सत्र में पढ़ाये गये प्रायोगिक विषयों पर)।
- मौखिक परीक्षा।

रजिस्ट्रार
भारतीय चिकित्सा परिषद,

रूग्ण परिचर्या एवं व्यवहार आयुर्वेद (द्वितीय प्रश्न–पत्र)

1. a. विष – परिभाषा, गुण, वेग वेगान्तर, वर्गीकरण, तथा सामान्य ज्ञान।
   b. स्थावर, जांगम– अधिष्ठान, भेद तथा सामान्य ज्ञान।
   c. निम्नलिखित विष और उपविष का सामान्य ज्ञान–
   कुपीलु, अहिफेन, धतूरा, भाँग, गुंजा, भल्लातक, जयपाल, अर्क, स्नुही, करवीर, लांगली, चित्रक, वत्सनाभ, एरण्ड, हृत्पत्री, धातुविष (आर्सेनिक, पारद)।
   d. सर्पविष, मूषक, अलर्क, वृश्चिक, लूता विष का प्राथमिक उपचार।

2. Poisonous & Dangerous Drug Acts-
   a) Poisons Act 1919
   b) Dangerous Drug Act 1930
   c) Drugs & Cosmotics Act 1940
   d) Pharmacy Act 1948
   e) Drug Control Act 1950
   f) Magic Remedies Act 1954
   g) Narcotic Drugs & Psychotropic Substances Act 1985

3. प्राथमिक उपचार (Primary treatment)–
   — सद्यः व्रण
   — अग्निदग्ध– Rule of '9', Degree of burn
   — सूर्य रश्मि दग्ध (Sun burn)
   — हिम दग्ध – Frost bite and Trench foot
   — पानी में डूबना – (Drowning)
   — दम घुटना –Asphyxia
   — मूर्छित अवस्था – Unconsciousness
   — अस्थि भग्न, संधि च्युत (Fracture & dislocation) –
   — कृत्रिम श्वसन - Artificial respiration
   — आकस्मिक घटना सम्बन्धी वस्तुओं की तैयारी व ज्ञान
   — शरीर के विभिन्न भागों के लिए वर्णानुसार पट्टियों (Bandage) का ज्ञान।

4. 1. शरीर मे रोगोत्पादक जीवाणुओं का प्रवेश
   जीवाणु नष्ट करने की विधियां– निर्जन्तुकरण प्रक्रियाओं का ज्ञान।

   2. शल्य भवन की व्यवस्था तथा देखरेख
      1) शल्य सम्बंधी पूर्व कर्म (रोगी से सम्बन्धित)
      2) आतुरालय के उपकरण, उनके नाम और प्रयोग (scalpel, toothed forceps, alley's forceps, artery forceps, needles, catgut & needle holder)
      3) शस्त्रों के निर्जन्तुकरण, सुरक्षित रखने की विधि,
      4) क्रियात्मक शल्य चिकित्सा के पूर्व सामान्य क्रियाओं तथा शल्य कक्ष में प्रवेश की विधि
   3. संज्ञाहर द्रव्यों– सामान्य ज्ञान एवं सावधानियाँ।

   4. व्यवस्था पत्र प्राप्त करने, योग तैयार करने, वितरण के नियम।

   5. चिकित्सालय, निर्माणशाला आदि के विभिन्न विभागों की कार्य प्रणाली एवं प्रशासन का ज्ञान

   6. परिवार नियोजन सम्बन्धी प्रमुख विधियों का परिचय एवं परिचारक का योगदान।

रजिस्ट्रार

(15)

शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान (प्रथम प्रश्न–पत्र)

क्र.सं.	अध्याय
1.	शरीर शब्द की व्याख्या, षडंग शरीर, शरीर के पाचभौतिक तत्व
2.	कोष्ठ– परिभाषा, कोष्ठ अवयवों मुख्य रूप से यकृत (liver), आमाशाय (stomach), प्लीहा (spleen), अग्न्याशय (pancreas), मूत्राशम (Urinary bladder), पित्ताशय (Ovary, gall bladder) का आधुनिक मत से शरीर में क्रियात्मक वर्णन
3.	**अस्थि संस्थान**– आयुर्वेद एवं आधुनिक मतानुसार अस्थियों की संख्या एवं प्रकार। अस्थि धातु उत्पत्ति, पंचभौतिकतत्व। आधुनिक मत से Clavicle, scapula, humerus, radius, ulna, hip bone, femur, tibia, fibula, patella, Ribs, vertebrate का संक्षिप्त परिचय।
4.	**सन्धि संस्थान**– आयर्वेद एव आधुनिक मतानुसार संन्धियों की संख्या एवं प्रकार। Hip joint, elbow joint, shoulder joint, knee joint, ankle joint का वर्णन।
5.	**मांसपेशी संस्थान**– आयुर्वेद एवं आधुनिक मतानुसार मांसपेशी की परिभाषा, स्वरूप, संख्या एवं प्रकार। Deltoid, Lattismus dorsi, Trapezius, Diaphragm, Pectoralis major, gluteal muscles, Sartorius, Quadratus Femoris, Triceps, Biceps, Gluteal Muscles, Adductor muscles of thigh, Psoas Major & Minor, Soleus का शरीर रचना की दृष्टि से परिचय एवं कार्य।
6.	**रक्त वह संस्थान**– रक्त की उत्पत्ति, स्वरूप, पंचभौतिकतत्व, उपधातु का वर्णन आयुर्वेद मतानुसार। आधुनिक मतानुसार– Formation and composition of blood, functions of blood, Heart, circulation of blood
7.	**लसिका**– उत्पत्ति एवं स्वरूप आधुनिक मतानुसार– cervical, axillary, inguinal, supraclavicular का संक्षिप्त परिचय एवं कार्य।
8.	**मर्म**– परिभाषा, संख्या, प्रकार एवं महत्त्व।
9.	**स्त्रोत्स**– परिभाषा, प्रकार एवं स्रोत मूल।
10.	**प्रकृति**– परिभाषा, प्रकार एवं प्रकृति परीक्षण का महत्त्व।

रजिस्ट्रार
भारतीय चिकित्सा परिषद,
उत्तराखण्ड

शरीर रचना एवं क्रिया विज्ञान (द्वितीय प्रश्न–पत्र)

क्रं.सं.	अध्याय
1.	**त्वक् शरीर**– परिभाषा, उत्पत्ति, स्वरूप एवं प्रकार आधुनिक– Layers of skin, functions of skin
2.	**कला शारीर**– परिभाषा, आयुर्वेद एवं आधुनिक मतानुसार सप्तकला परिचय। आधुनिक– सप्त कला– modern correlation
3.	**श्वसन संस्थान**– श्वसन मार्ग एवं फुफ्फुस का परिचय, फुफ्फुस रचना एवं क्रिया, श्वसन क्रिया (आयुर्वेद एवं आधुनिकमतानुसार)।
4.	**मूत्रवह संस्थान**– मूत्र तंत्र के अवयव एवं कार्य, **वृक्क** (Kidney)– वृक्क की स्थिति, रचना एवं कार्य, Nephron का स्वरूप, मूत्र निर्माण एवं विसर्जन क्रिया (आयुर्वेदिक एवं आधुनिक मतानुसार)।
5.	**अन्तः स्रावी ग्रन्थियां**– अवटु (Thyroid), पीयूषिका (Pituitary), अधिवृक्क (Suprarenal), अग्नाशय (Pancreas), यकृत (Liver) का संक्षिप्त परिचय। स्राव, स्राव की अल्पता एवं अधिकता से होने वाले रोग एवं उनके लक्षण।
6.	दोष, धातु, मल– संख्या, गुण एवं प्राकृतिक कर्म।
7.	**इन्द्रियों की संख्या** :– ज्ञानेन्द्रियां, कर्ण (Ear), नेत्र (Eye), त्वचा (Skin), जिव्हा (Tongue), नासा(Nose) का क्रियात्मक वर्णन।
8.	प्रजनन संस्थान– स्त्री एवं पुरूष जननांग, ऋतुचक्र (संक्षिप्त)।
9.	**गर्भ शारीर**– गर्भ परिभाषा, उत्पत्ति, पोषण, विकास, अपरा, गर्भ परिसंचरण, गर्भिणी आहार–विहार, मासानुमासिक क्रम।
10.	पाचन संस्थान– अग्नि, आहार पाकनकर्म, अवस्थापाक, विपाक, आहार परिणामकर भाव, अष्टविधि विशेष आयतन। आधुनिकमतानुसार – Vitamins, Gastrointestinal tract, function of liver, gall bladder and pancreas, Digestion of Carbohydrates, Protein & Fat etc.

प्रयोगात्मक (Practical)-

- मूत्र परीक्षण– Physical examination of Urine, chemical examination of Sugar, Albumin, Acetone.

रजिस्ट्रार
आयुर्वेद विश्वविद्यालय परिषद्

आयुर्वेद परिचय एवं स्वस्थवृत्त (प्रथम प्रश्न–पत्र)

क्र.सं.	अध्याय
1.	आयुर्वेदावतरण
2.	आयुर्वेद शब्द की निरूक्ति
3.	आयुर्वेद की परिभाषा
4.	आयु का लक्षण, आयु का मान, आयुर्वेद का अधिष्ठान
5.	आयुर्वेद का प्रयोजन
6.	आयुर्वेद के आठ अंग (अष्टांग आयुर्वेद)
7.	पंचमहाभूत परिचय
8.	दोष, धातु, मल का सामान्य परिचय
9.	त्रय एषणायें
10.	चिकित्सा के चतुष्पाद और उसमें वैद्य का प्राधान्य एवं उपवैद्य के कर्त्तव्य (उपस्थाता)
11.	वैद्यकीय आचार संहिता
12.	आरोग्य एवं अनारोग्य के लक्षण
13.	लघु त्रयी एवं वृहत् त्रयी परिचय
14.	स्वस्थ एवं स्वास्थ्य परिभाषा, स्वस्थ की परिभाषा आधुनिक मतानुसार (according to WHO), स्वस्थवृत्त की परिभाषा एवं स्वस्थवृत्त का प्रयोजन एवं महत्त्व
15.	आयुर्वेद में चर्या का महत्त्व यथा दिनचर्या परिभाषा, पालन, ब्रह्ममुहूर्त में जागना, उषापान, शौच कर्म, मुख शुद्धि, प्रातः भ्रमण, व्यायाम, अभ्यंग, स्नान आदि का महत्त्व
16.	गण्डूष, नस्य, अंजन, धूमपान का विवरण
17.	ऋतुचर्या– षड्ऋतु वर्णन, रात्रिचर्या, निद्रा एवं ब्रह्मचर्य
18.	धारणीय एवं अधारणीय वेग
19.	सद्वृत्त, आचार रसायन, निंदित एवं अनिंदित पुरूष, त्रयउपस्तम्भ, आहार, आहार के आवश्यक तत्व, आहार विधि विशेष आयतन, आहार काल, विषम आहार, विरूद्ध आहार, मद्य सेवन से हानियां, तम्बाकू से हानियां, उपवास, सन्तुलित आहार, मांसाहार, शाकाहार, दुग्धाहार', पथ्य–अपथ्य, पोषण कार्यक्रम
20.	आधुनिक मतानुसार स्वस्थ व्यक्ति का तापमान, नाडी एवं नाडी गति, रक्त चाप, श्वास–उच्छ्वास गति, शरीर का सामान्य भार आदि का वर्णन

आयुर्वेद परिचय एवं स्वस्थवृत्त (द्वितीय प्रश्न–पत्र)

क्रं.सं.	अध्याय
1.	वायु संगठन, वायु प्रदूषण से होने वाली व्याधियां, वायु प्रदूषण एवं नियन्त्रण उपाय (prevention & control of air pollution), वेंटिलेशन (प्रवीजन), वायु शुद्धि के उपाय(purification of air), पर्वतीय वायु के गुण।
2.	स्वच्छ एवं पीने योग्य जल के गुण, जल प्राप्ति स्त्रोत, जल की अशुद्धियां, जल–शुद्धि के आयुर्वेदीय एवं आधुनिक उपाय, दुषित जल से होने वाली व्याधियां
3.	भूमि (Land/Housing) –निवास योग्य गृह, गृह निर्माण व्यवस्था (Housing)
4.	अपद्रव्य(waste) परिभाषा, अपद्रव्य एकत्रित एवं दूरीकरण के उपाय, मल निर्हरण की विधियां, मल निष्कासन, जल संवहन विधि, सैप्टिक टैंक आदि का ज्ञान
5.	स्वास्थ्य को हानि पहुँचाने वाले कार्य/व्यवसाय, जनपदोध्वंस–कारण एवं रोकथाम उपाय
6.	संक्रामक रोग(infectious disease)– संक्रमण की परिभाषा, संक्रामक रोगों को रोकने के उपाय, विसंक्रमण विधि (disinfection), विसंक्रामक तत्वों का परिचय(introduction & classification of disinfectant), रोग प्रतिरोधक क्षमता (immunity), टीकाकरण (imunization), विभिन्न संक्रामक रोगों का सामान्य परिचय एवं रोकथाम जैसे– मलेरिया, विसूचिका(cholera), अतिसार (diarrahoea), आंत्रिक–ज्वर(typhoid/enteric fever), रोमान्तिका(measles), रेबिज (rabies), एड्स, यौन रोग(S.T.D.), धनुर्वात(Tetnus), राजयक्ष्मा (tuberculoses), मम्पस, संक्रामक कामला(infectious Jaundice), डिपथीरिया, काली खाँसी, डेंगू, स्वाइन फ्लू, निमोनिया, कुष्ठ(leprosy), पोलियो (Pliomyelitis)
7.	परिवार कल्याण कार्यक्रम एवं अन्य राष्ट्रीय कार्यक्रम में उसकी महत्ता तथा परिवार नियोजन सम्बन्धी उपाय
8.	योग– योग की परिभाषा, हठ योग, स्वास्थ्य रक्षा में योग का महत्त्व, अष्टांग योग
9.	आसन की परिभाषा एवं उपयोगिता – प्रमुख आसन का ज्ञान जैसे पद्मासन, वज्रासन, पवनमुक्तासन, पश्चिमोत्तानासन, कुर्मासन, मण्डूकासन, चक्रासन, वीरासन, ताडासन, भुजंगासन, धनुरासन, सर्वांगासन, अनुलोम–विलोम, प्राणायाम, कपालभाति, सूर्यनमस्कार। – षटकर्म का सामान्य ज्ञान

क्रियात्मक (Practical)-

- चिकित्सालयों का भ्रमण, जल संस्थान निरीक्षण, आसनों का अभ्यास

- रक्त परीक्षण– Formation and staining of blood smear, Hb, TLC, DLC, ESR, B.T., C.T., Blood group test etc.
- अंग अवयव का प्रत्यक्ष ज्ञान
- Viva-Voce (मौखिक)
- अस्थियाँ
- File (practical) – Diagrams with summary
- Project work- any topic from syllabous & chart

द्रव्यगुण एवं द्रव्य–परिचय (प्रथम प्रश्न–पत्र)

1. द्रव्यगुण विज्ञान की परिभाषा, प्रयोजन एवं महत्त्व। द्रव्यगुण के सप्त पदार्थ यथा द्रव्य, रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभाव एवं कर्म का सामान्य परिचय एवं परस्पर सम्बन्ध।
2. सैद्धान्तिक दृष्टि से द्रव्यों का संक्षिप्त वर्गीकरण।
3. निम्न औद्भिद् गणों का निरूपण यथा– वृहत्पंचमूल, लघुपंचमूल, दशमूल, त्रिफला, स्वल्प त्रिफला, सुगंधि त्रिफला, त्रिकटु, चतुरूषण, पंचकोल, षडूषण, चतुर्बीज, त्रिमर्द, त्रिजातक, चतुर्जातक, पंचतिक्त, पंचपल्लव, पंचवल्कल, अम्लपंचक, पित्तपंचक, उपविष, महापंचविष, पंचलवण, अष्टवर्ग, जीवनीयगण आदि।
4. कर्म की निरूक्ति, लक्षण, स्वरूप, भेद एवं निम्न कर्मों का सोदाहरण विवेचन यथा– दीपन, पाचन, अनुलोमन, वमन, विरेचन, भेदन, विष्टम्भी, ग्राही–स्तम्भन, मेध्य, मदकारी, रसायन, बाजीकरण, स्नेहन, रूक्षण आदि।
5. आधुनिक चिकित्सा में प्रयुक्त होने वाली निम्नलिखित औषधियों का परिज्ञान–
   (1) ऐस्प्रीन
   (2) ऐण्टीसैप्टिक्स
   (3) टिंचर आयोडीन
   (4) कॉस्टर आयल
   (5) पोटेशियम परमैंग्नेट
   (6) सोडा बाइकार्व
   (7) बोरिक एसिड
   (8) जिंक आक्साइड

रजिस्ट्रार
भारतीय चिकित्सा परिषद,
उत्तराखण्ड

(9) एण्टीबायोटिक्स का संक्षिप्त ज्ञान

(10) सल्फा ड्रग का सामान्य परिचय

(11) विटामिन का सामान्य परिचय

(12) क्लोरोफार्म एवं अन्य संज्ञाहर द्रव्य

(13) आकस्मिक चिकित्सा (emorgencies) में प्रयुक्त होने वाली औषधियों का सामान्य ज्ञान जैसे एण्टी डॉयरियल, एण्टी मलेरियल, एनॉलजेसिक, एण्टीपॉयरेटिक, एण्टी हॉयपरटेन्सिव, एण्टी स्पॉस्मोडिक, एण्टी इमेटिक एवं अन्य आकस्मिक आघात आदि की चिकित्सा।

द्रव्यगुण एवं द्रव्य–परिचय (द्वितीय प्रश्न–पत्र)

अ. निम्न द्रव्यों का सम्पूर्ण ज्ञान :

1.	अग्निमंथ	19.	करवीर	37.	तालीश	55.	ब्राह्मी
2.	अजमोदा	20.	कम्पिल्लक	38.	तुलसी	56.	भल्लातक
3.	अपामार्ग	21.	कर्कटश्रंगी	39.	त्रिवृत्त	57.	भृंगराज
4.	अर्कद्वय	22.	कर्पूर	40.	त्वक्पत्र	58.	मंजिष्ठा
5.	अर्जुन	23.	कॉंचनार	41.	दन्ती	59.	मण्डूकपर्णी
6.	अशोक	24.	कालमेघ	42.	दाडिम	60.	मरिच
7.	अश्वगंधा	25.	किराततिक्त	43.	दारूहरिद्रा	61.	यवानी
8.	आमलकी	26.	कुटज	44.	देवदारू	62.	रसोन
9.	हरीतकी	27.	कुपीलु	45.	नागकेशर	63.	रास्ना
10.	विभीतकी	28.	कुमारी	46.	निम्ब	64.	लोध्र
11.	आरग्वध	29.	खदिर	47.	निर्गुण्डी	65.	वचा
12.	उदुम्बर	30.	गुग्गुलु	48.	पलाश	66.	वासा
13.	उशीर	31.	गुडुची	49.	पिप्पली	67.	शंखपुष्पी
14.	एरण्ड	32.	गोक्षुर	50.	पुनर्नवा	68.	शतावारी
15.	एलाद्वय	33.	चन्दन	51.	पुष्करमूल	69.	शुण्ठी
16.	कटुका	34.	चित्रक	52.	कुष्ठ	70.	मधुयष्ठी
17.	कपिकच्छु	35.	जीरकद्वय	53.	बलापंचक		

रजिस्ट्रार

18.	करंज	36.	ज्योतिष्मती	54.	बिल्व

ब. निम्न द्रव्यों का औषधीय नाम, रासायनिक संगठन, परिचय, औषधीय गुण एवं प्रयोग–

1.	चव्य	16.	रोहितक	31.	अंजीर	46.	पलाश
2.	यवानी	17.	अरिष्टक	32.	महुआ	47.	सेहुण्ड
3.	अजमोदा	18.	उशीर	33.	कनेर	48.	विधारा
4.	जीरकद्वय	19.	लताकस्तूरी	34.	बकायन	49.	बबूल
5.	सौंफ	20.	दूर्वा	35.	गुलाब	50.	शाल्मली
6.	मेथी	21.	तगर	36.	चमेली	51.	पद्मक
7.	वायविडंग	22.	हींग	37.	कमल	52.	कुलत्थ
8.	वंशलोचन	23.	पुदीना	38.	श्रृंगाटक	53.	एरण्ड
9.	मकोय	24.	पान	39.	करौंदा	54.	देवदार
10.	कर्कटश्रृंगी	25.	मरूबक	40.	कमरख	55.	विजयसार
11.	शंखपुष्पी	26.	गूलर	41.	आम्र	56.	प्रियंगु
12.	अमरबेल	27.	पीपल	42.	जम्बू	57.	इक्षु
13.	द्रोणपुष्पी	28.	वट	43.	अनार	58.	पटोल
14.	गोजिह्वा	29.	प्लक्ष	44.	नींबू	59.	कारवेल्लक
15.	कण्टकारी	30.	बृहती	45.	गोक्षुर	60.	वचा

स. निम्न वर्गों का परिचय एवं औषधीय गुणकर्म–

1. दुग्धवर्ग 2. मधुवर्ग 3. मूत्रवर्ग 4. लवणवर्ग 5. क्षारवर्ग 6. जलवर्ग

प्रयोगात्मक (Practical)- 100

- शैक्षणिक भ्रमण – 20
- हर्बेरियम फाईल (कम से कम 25 पादप) – 20
- उपस्थिति / अनुशासन – 10
- मौखिक परीक्षा – 50

रजिस्ट्रार
भारतीय चिकित्सा परिषद,
उत्तराखण्ड